हितोपदेश

की रोचक कहानियाँ

पं० नारायण शर्मा
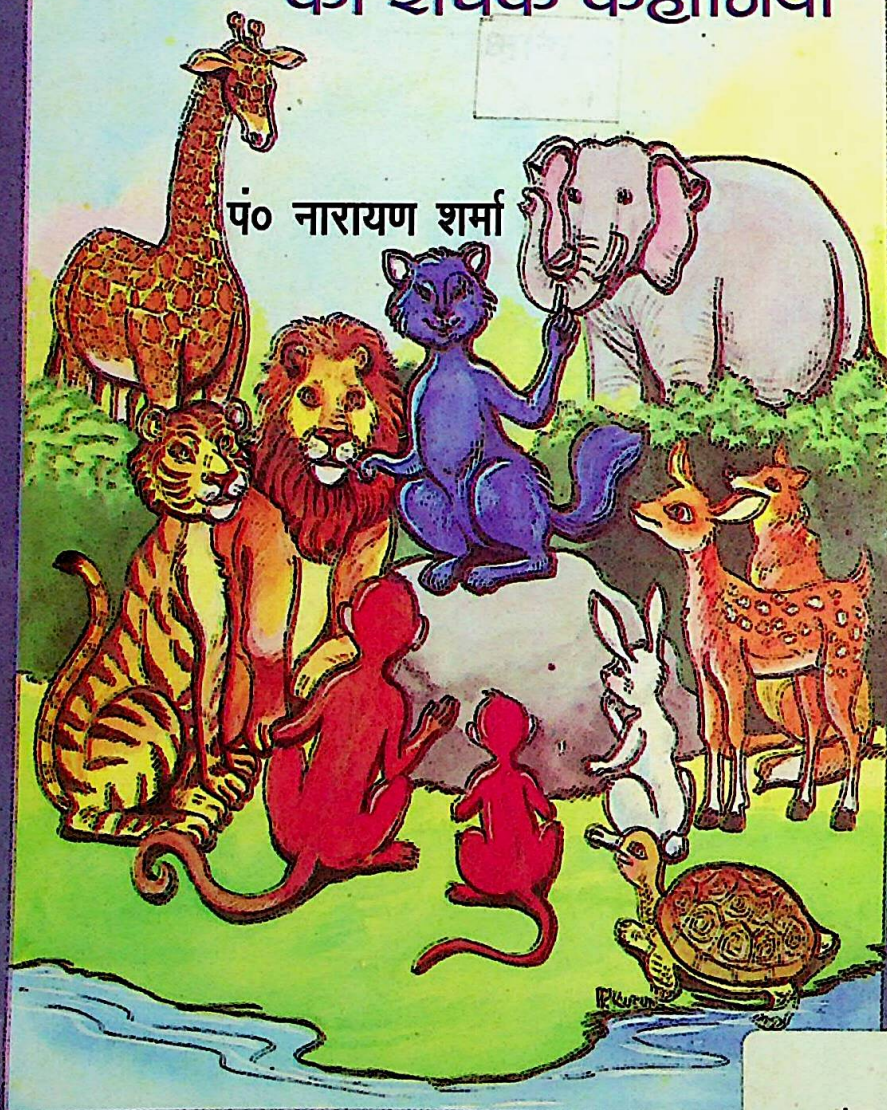
हितोपदेश की रोचक कहानियाँ

लेखक
पं० नारायण शर्मा
अनुवादक
विजयकुमार झा

गोविन्दराम हासानन्द

ISBN : 81-7707-082-3

प्रकाशक : गोविन्दराम हासानन्द
4408, नई सड़क, दिल्ली-110 006 (भारत)
संस्करण : प्रथम, 2007
मूल्य : 15.00 रुपए
शब्द संयोजक : भगवती लेजर प्रिंट्स, नई दिल्ली-65
मुद्रक : स्पीडो ग्राफिक्स, दिल्ली-51

HITOPADESH KI ROCHAK KAHANIYAN
by Pt. Narayan Sharma

निवेदन

'हितोपदेश' विश्व-प्रसिद्ध रचना है। इसके रचनाकार थे पं० नारायण शर्मा। इसकी कथा-कहानियाँ आज भी विश्व में कही और सुनी जाती हैं। सदाचार, शिष्टाचार, नैतिकता, कर्तव्यनिष्ठा, साहस, बल-बुद्धि, चातुर्य एवं नीतिगत तथ्य आदि की झलक इनमें मिलती है।

इसका अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में हो चुका है। हिन्दी में भी इसके अनेक अनुवाद उपलब्ध हैं। पर मैंने कथा को रोचक बनाने के लिए भावानुवाद का सहारा लिया है। हर तंत्र की प्रमुख कथा को स्वतंत्र कथा का रूप दिया है। अवान्तर कथाएँ अलग-अलग कर दी हैं। स्वस्थ मनोरंजन हेतु कुछ प्रसंगों को छोड़ दिया है। संक्षिप्तता पर विशेष ध्यान दिया है ताकि पढ़ने में सुभीता रहे। आशा है, आप लाभ उठाएँगे। त्रुटियों से अवगत कराने के लिए मैं आपका सर्वदा आभारी रहूँगा।

—अनुवादक

विषय-सूची

1. जाल कटा

गोदावरी के तट पर सेमल का पेड़ था। उस पर लघुपतनक नामक कौआ रहता था। एक दिन उसने एक शिकारी को घूमते हुए देखा। उसे शिकारी की नीयत पर शंका हो गई। वह उसके पीछे लग गया। एक जगह शिकारी ने जाल फैलाया। उस पर दाने बिखेर दिए। तभी कहीं से कबूतर आ गए। उनका मुखिया था चित्रग्रीव।

चित्रग्रीव ने साथियों को दाना चुगने से मना किया। पर वे नहीं माने और दानों के

लालच में जाल में जा फँसे। अब वे पछताने लगे। चित्रग्रीव ने उन्हें समझाया। कहा—"हम सभी एक-साथ उड़ेंगे। शिकारी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। यहाँ से कुछ दूरी पर मेरा मित्र हिरण्यक चूहा रहता है। मेरे कहने पर वह जाल काट देगा और हम मुक्त हो जाएँगे।"

सहसा शिकारी जाल की तरफ बढ़ा। तभी कबूतर उड़ गए। कौआ भी उनके पीछे-पीछे उड़ चला। कबूतर एक पेड़ के पास उतर गए। चित्रग्रीव ने मित्र हिरण्यक चूहे को आवाज लगाई। चूहा बिल से बाहर आ गया। उसने आनन-फानन में जाल काट दिया। कबूतर उसे धन्यवाद देते हुए उड़ गए।

कौए ने कबूतर एवं चूहे की ऐसी दोस्ती देखी तो वह बहुत खुश हुआ। उसने भी चूहे से दोस्ती करनी चाही। वह उसके बिल के पास जा पहुँचा। उसने चूहे को आवाज लगाई। चूहा बिल में से ही बोला—"बताओ क्या बात है?"

कौए ने कहा—"मैं तुमसे मित्रता करना चाहता हूँ।"

"लेकिन तुम तो मेरे भक्षक हो। मेरी तुमसे दोस्ती कैसे हो सकती है ?"—चूहे ने कहा।

कौआ बोला—"तुम जैसे छोटे प्राणी को खाकर भला मेरी भूख कैसे मिटेगी ? पर तुम्हारी मित्रता से मेरा भला जरूर हो जाएगा। यदि तुमने मुझसे दोस्ती नहीं की, तो मैं आत्महत्या कर लूँगा।"

यह सुन चूहे ने कौए से मित्रता कर ली। कौआ खुशी-खुशी लौट गया। एक दिन वह चूहे के पास गया। वह बोला—"मित्र, आजकल मुझे भोजन तलाशने में कठिनाई हो रही है। अतः अब दूसरी जगह रहने का मन बना रहा हूँ।"

चूहे ने कहा—"पर मित्र ! तुम्हें अपना स्थान नहीं बदलना चाहिए।"

"स्थान न बदलूँ तो भूखा रहना पड़ेगा।" कौए ने कहा।

चूहे ने पूछा—"तुम जा कहाँ रहे हो ?"

कौए ने कहा—"दंडकारण्य में एक तालाब है। वहाँ मेरा दोस्त मंथर नामक कछुआ रहता है। मैं वहीं जाऊँगा।"

चूहे ने कहा—"मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।"

तालाब पर पहुँचकर कौए ने चूहे का कछुए से परिचय कराया। मंथर ने उनका खूब आदर-सत्कार किया। कछुए ने कौए से वहाँ आने का कारण पूछा। कौए ने भोजन की दिक्कत बताई।

कछुए ने कहा—"मित्र, तुममें संचय करने की इच्छा पनप रही है। इसी वजह से तुम परेशान हो। खैर, अब तुम सब यहाँ आराम से रहो।"

वे मजे से वहाँ रहने लगे। एक दिन उन्होंने एक हिरण को भागते हुए देखा। उन्हें खतरे का आभास हो गया। कछुए ने पानी में डुबकी लगा दी। चूहा बिल में घुस गया। कौआ पेड़ पर जा बैठा।

उन्होंने हिरण से भागने का कारण पूछा। हिरण बोला—"एक शिकारी मुझे मारने पर तुला है। तुम लोग मेरी रक्षा करो।"

उन्होंने हिरण को दोस्त बना लिया। हिरण भी निडर होकर घूमने लगा।

एक दिन हिरण ने कछुए को बताया कि

जंगल में कलिंग का राजा कामांगद आया हुआ है। उसने चन्द्रभागा नदी के किनारे डेरा डाल रखा है। कल उसका पड़ाव इसी तालाब पर लगेगा। अतः हमें उससे बचने का उपाय सोचना चाहिए।

चूहा बोला—"हम तो दूसरी जगह जा सकते हैं, पर कछुआ कैसे जाएगा ?" लेकिन कछुए ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और जमीन पर चलने लगा। यह देख उसके दोस्त उसके पीछे चल पड़े।

रास्ते में ही शिकारी ने कछुए को पकड़ लिया। दोस्तों ने यह देखा, तो दुःखी हो गए। वे भी उसके पीछे चल दिए। उन्होंने कछुए को छुड़ाने की ठान ली।

चूहे ने कहा—"हिरण, तुम तालाब के किनारे साँस रोककर लेट जाओ, ताकि शिकारी तुम्हें मरा समझ ले।" उसने कौए से कहा—"तुम हिरण पर बैठकर उसे चोंच से कुरेदने का नाटक करना। ऐसा करने से शिकारी हिरण को पकड़ने बढ़ेगा। वह जाल जमीन पर रख देगा। मैं मौका पाते ही जाल काट दूँगा। शिकारी

जैसे ही पास आएगा, तुम इशारा कर देना और खुद भाग जाना।"

फिर तीनों ने ऐसा ही किया। शिकारी ने जाल रखा और हिरण की ओर बढ़ा। तब तक चूहे ने जाल काटकर मंथर को मुक्त कर दिया। शिकारी के आने का संकेत कौए ने किया और उड़ गया। हिरण भी भाग खड़ा हुआ।

शिकारी लौटा तो उसने देखा—जाल कटा पड़ा है। इसी बीच कछुआ भी छपाक् के साथ पानी में कूद गया। चूहा बिल में जा घुसा। शिकारी खाली हाथ लौट गया। उसके जाते ही मित्रों में खुशी की लहर दौड़ गई।

एकता में बल होता है।

2. दलदल

दक्षिण भारत में एक तालाब था। वहाँ एक बाघ रहता था। वह बूढ़ा हो गया था। घूमने-फिरने में असमर्थ था। वह शिकार भी नहीं कर पाता था। पर था वह बहुत चतुर। जैसे-तैसे जुगाड़ करके अपना पेट भर लेता था।

एक बार बाघ तट पर बैठा था। उसके एक

हाथ में कुशा थी, तो दूसरे में सोने का कंगन।

तालाब के पास से रास्ता जाता था। उससे लोग आ–जा रहे थे। उसने आवाज लगाई— "राहगीरो! मैं सोने का कंगन दान करना चाहता हूँ। जिसे कंगन लेना हो, वह जल्दी ही मेरे पास आ जाए।"

राहगीरों ने यह सुना, तो उस पर हँस पड़े। सोचा—'बाघ हमें मूर्ख बना रहा है। कंगन के

बहाने हमें मारकर खाना चाहता है।' यह सोच वे आगे निकल गए।

पर सारे राहगीर तो एक-जैसे थे नहीं। एक लालची वहाँ रुक गया। उसने सोचा—'बाघ से दान में कंगन ले लेना चाहिए।'

बाघ तो खूब खेला-खाया था। उसने राहगीर की दुविधा भाँप ली। बोला—"राहगीर भाई! मेरे पास आओ। यह कंगन ले लो।" कहते हुए उसने कंगन दिखाए।

राहगीर ने सोचा—'बाघ पर विश्वास कैसे किया जाए?' वह बोला—"तुम हिंसक हो। अतः मुझे तुम पर विश्वास नहीं होता। कहीं तुमने मुझे हार बना लिया तो···?"

बाघ ने कहा—"तुम्हारा कहना सही है। पर मैंने बहुत दिनों से ऐसे काम छोड़ दिए हैं। मैं अपने पापों के कारण निःसंतान हो गया हूँ। अब मेरा मन भी संसार से उचट गया है। एक दिन किसी महात्मा ने मुझे बताया कि दान करने से मन को शांति मिलेगी। अतः अब मैं दान-पुण्य करने लगा। तुम देख सकते हो कि मेरे दाँत-नाखून कितने कमजोर हो गए हैं।

मांस–भक्षण अब मेरे वश का कहाँ रहा?'' कहते हुए उसने अपने दाँत और नाखून राहगीर को दिखाए।

यह सुन राहगीर तट पर आ गया। बाघ ने राहगीर से नहाने को कहा। राहगीर तालाब में उतर गया, पर वह दलदल में फँस गया।

राहगीर ने कहा—''बाघ भाई, मेरी मदद करो और मुझे दलदल से बाहर निकाल दो।''

बाघ हँसा, बोला—''मैं तुम्हें आज संसार के दलदल से ही मुक्त कर देता हूँ।'' कहते हुए उसकी ओर बढ़ा और उसे मारकर खा गया।

लालच बुरी बला है।

3. सिर पर डंडा

चम्पकवती नामक वन में एक हिरण रहता था। एक दिन उसकी सुबुद्धि नामक कौए से दोस्ती हो गई। एक बार हिरण घूमते हुए बहुत दूर निकल गया। गीदड़ ने उसे देखा, तो उसके मुँह से लार टपकने लगी। उसकी भूख भी बढ़ गई। वह हिरण के पास पहुँचा। उसका हाल–

चाल पूछा। फिर अपना परिचय दिया। बोला—“मैं क्षुद्रबुद्धि हूँ। तुमसे दोस्ती करना चाहता हूँ।” हिरण ने उससे मित्रता कर ली। वे कौए के पास पहुँचे।

कौए ने गीदड़ के बारे में पूछा। हिरण ने कहा—“यह मुझसे दोस्ती करना चाहता है।” यह सुन कौआ बोला—“तुम्हें इस अनजान गीदड़ से दोस्ती नहीं करनी चाहिए।”

यह सुन गीदड़ का दिमाग गरम हो गया। वह बोला—“सुबुद्धि, तुम भी शुरु-शुरु में इसके लिए अनजान ही रहे होगे। फिर धीरे-धीरे मित्र बन गए। इसी प्रकार मुझे भी मित्र बना लो!”

हिरण ने भी गीदड़ का समर्थन किया। कौआ कुछ भी न बोला। हिरण और गीदड़ मजे से रहने लगे।

एक दिन गीदड़ और हिरण खेत में गये। वहाँ हरा और ताजा चारा पाकर वे बड़े प्रसन्न हुए।

वे अगले दिन भी गए, पर हिरण जाल में फँस गया। हिरण ने गीदड़ से मदद माँगी, पर

गीदड़ के मन में तो कपट था। बोला—"आज रविवार है। मेरा व्रत है। ऐसे में मैं जाल की चर्बी वाली ताँत को कैसे अपने दाँतों से काट सकता हूँ? कल सुबह होते ही मैं जाल काट दूँगा।" कहता हुआ वह झाड़ी में जा छिपा। हिरण उसकी मक्कारी समझ गया था।

कुछ देर बाद वहाँ कौआ आया। उसने हिरण को जाल में देखा। उसने उसे आश्वासन दिया। बोला—"तुम्हारा मित्र गीदड़ कहाँ है?"

हिरण ने कहा—"वह मुझे खाने की ताक में है। आसपास किसी झाड़ी में बैठा होगा।"

तभी खेत का मालिक हाथ में डंडा लिये हुए उन्हें आता हुआ दिखाई पड़ गया। कौए ने हिरण को कुछ समझाया।

खेत का मालिक वहाँ आया। उसने हिरण को देखा तो बोला—"लगता है यह तो मर गया। तभी तो इसका पेट फूला हुआ है।" यह सोच उसने हिरण को जाल से बाहर कर दिया।

तभी कौए ने काँव-काँव की, तो हिरण झटपट वहाँ से भाग खड़ा हुआ। खेत के मालिक ने गुस्से में उसे डंडा फेंककर मारा। हिरण तो बच गया, पर वह डंडा झाड़ी में छिपे गीदड़ को जा लगा। गीदड़ वहीं ढेर हो गया।

जैसी करनी, वैसी भरनी।

संस्कृत साहित्य में ही नहीं, अपितु विश्व—साहित्य में भी 'हितोपदेश' की अपनी पहचान है। इसके रचयिता पंडित नारायण शर्मा थे। इन कहानियों में सदाचार, शिष्टाचार, साहस, लोक—व्यवहार, बुद्धि आदि की महत्ता प्रकट की गई है।

यहाँ कहानियाँ संक्षिप्त रूप में भावानुवाद की साथ संयोजित हैं। रोचकता और सरलता का विशेष ध्यान रखा है।